यूं ही राह चलते-चलते

अलका प्रमोद

यूं ही राह चलते-चलते

अलका प्रमोद

जीवन के सहपात्री
श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय को!

1

चाय की चुस्की लेते हुए रजत बोले–"अगर तुम मुझे ढाई लाख रुपए दो तो मैं तुम्हें एक सरप्राइज दे सकता हूं।"

"ये कौन सा सरप्राइज है जिसकी कीमत ढाई लाख रुपए है?"

"घाटे में नहीं रहोगी! ये मेरा वादा है।"

बात को मजाक में लेते हुए अनुभा ने हां कह दी। बात आई-गई हो गई।

शाम को उसे पता चला कि बात गम्भीर थी और उसे सच में ढाई लाख का इंतजाम करना होगा। पर सरप्राइज इतना आकर्षक था कि अनुभा को ढाई लाख का सौदा भी सस्ता लगा। उन्नीस दिनों के लिए यूरोप भ्रमण के लिए पर्यटन कम्पनी का विज्ञापन था। अनुभा को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसका वर्षों का सपना पूरा होने की कगार पर है।

अब तो दो तीन दिन दोनों अपनी-अपनी जमा पूंजी में गोते लगाते रहे कि वो कितने मोती निकाल सकते हैं। चार दिनों बाद वो पर्यटन कम्पनी के आफिस में अपना नाम रजिस्टर्ड करा रहे थे। फिर तो जाने के दिन तक न जाने कितनी बार दोनों सपनों में ही यूरोप की सैर कर आए ।

जब अनिल भाईसाहब ने सुना तो बोले–"ये हुई कोई बात, कुछ भी कहो रजत अपना यार, है ज़िन्दा दिल आदमी, ज़िन्दगी जीना जानता है।"

अनुभा का उत्साह पूरे उत्कर्ष पर था, रजत के आफिस जाते ही मोबाइल उठाया और मोबाइल पर जिस-जिस को बता सकती थी, सभी को शुभ समाचार दे दिया कि वो विदेश यात्रा पर जा रहे हैं, वो भी एक दो नहीं पूरे यूरोप के देशों की यात्रा पर। सबसे पहले तो रीमा को फोन मिलाया, जब देखो विदेश से अपने भाई द्वारा लाई चीजें दिखाया करती थी। अब जब उसे पता चलेगा कि अनुभा तो स्वयं ही विदेश जा रही है तो निश्चय ही ईर्ष्या की ऐसी छौंक लगेगी कि उसके चारों ओर धुंआ ही धुंआ होगा।

'हैलो!' उधर से रीमा की आवाज़ आई।

अनुभा उत्साह में सामान्य औपचारिकता भी भूल गयी और सीधे बोली–"वो मैं इस बार किटी पार्टी में नहीं आ पाऊंगी, सोचा तुम्हें बता दूं।"

"क्यों क्या हुआ, सब ठीक तो है?"

"कुछ विशेष नहीं, मैं यूरोप जा रही हूं न! तो थोड़ी तैयारी करनी है।"

रीमा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, उसने पुष्टि के लिए पूछा–"यूरोप? क्यों किसी लकी ड्रा में आफर आ गया क्या?"

उसके आश्चर्य का आनन्द लेते हुए अनुभा ने कहा–"नहीं अपने खर्चे पर जा रहे हैं।" रीमा के लिए ये कोई सुखद सूचना नहीं थी, वह तो आयातित वस्तुओं को

पाकर ही स्वयं को विशिष्ट समझे बैठी थी और यह अनुभा विदेश जा भी रही है। रीमा चाह कर भी प्रसन्नता प्रकट न कर पायी और बॉय कह कर मोबाइल काट दिया।

अब अनुभा ने नन्दा को बताया तो वह सीधे खर्च का जोड़ घटाना लगाने लगी, उसने पूछा—"कितना खर्च होगा?"

अनुभा ने बताया दो लोगों का पांच लाख तो उसने मुंह बिचका कर कहा—"उन्नीस दिनों में पांच लाख फूंक-फाक कर आ जाना कहां की समझदारी है?"

चन्दा बुआ अवश्य उत्साहित हो गईं और ढेरों आशीर्वाद देते हुए बोलीं—"बहुत अच्छा लगा बेटी, चलो मैं तो कभी अपने प्रदेश की देहरी भी नहीं लांघ पायी, कम से कम तुम तो विदेश घूम आओगी, वहां के फोटो दिखा देना, मैं समझ लूंगी कि मैंने भी विदेश देख लिया।"

कुछ हितैषियों ने तो यहां तक सावधान किया कि सोच लो ये फिजूलखर्ची करने से पहले, कल को कोई संकट आया तो क्या होगा। पर सारी प्रतिक्रियाओं के बावजूद उन दोनों के उत्साह का पारा ज्यों का त्यों चढ़ा रहा।

यूरोप जाने के लिए जितना उत्साह था उतने ही उत्साह से खरीदारी की गयी। डर था कि कहीं दो दिनों की फोटो में एक ही तरह के कपड़े न आ जाएं, सो स्वाभाविक है कि उन्नीस दिनों के लिए उन्नीस परिधान होने चाहिए। यानि कि भूमिका भी खासी रुचिकर थी। हर दिन नेट पर यूरोप के विभिन्न देशों का तापमान देखा जाता और तय किया जाता कि किस स्थान पर कितने गरम कपड़े चाहिए होंगे। लखनऊ की गर्मी में स्विटजरलैंड के ऋणात्मक तापमान की कल्पना ही मन में रोमांच जगा रही थी।

अभी अनुभा सुखानुभूति में पूरी तरह डूबी भी नहीं थी कि रजत ने उसे सुख सागर से खींच कर बाहर निकाल लिया। वह सुबह की चाय बना रही थी कि रजत ने आवाज दी—"अनुभा जल्दी आओ!"

इतनी आतुरता से वो कम ही बुलाते हैं अतः अनुभा किसी अनहोनी की आशंका से हड़बड़ाती दौड़ कर कमरे में पहुंची। रजत ने बताया—"टी॰वी॰ में समाचार आ रहा है कि आइसलैंड में ज्वालामुखी फूटा है, जिसका धुआं लगभग छः किलोमीटर ऊपर तक उठ कर दूर-दूर तक पूरे आकाश में विस्तार पा रहा है, जिसके कारण पश्चिमोत्तर अनेक देशों की उड़ाने रद्द हो गई हैं और यह धुआं उत्तरोत्तर यूरोप के देशों की ओर बढ़ता जा रहा है। जाने में एक सप्ताह शेष था और उनके उत्साह के गुब्बारे में पिन चुभ गई।

जाने की तिथि में दो दिन शेष थे, दोनों जाने न जाने की दुविधा में परेशान बैठे थे। अनुभा को पश्चाताप हो रहा था कि व्यर्थ ही इतना प्रचार कर दिया, लगता है किसी की कुदृष्टि लग गयी। रजत ने पर्यटन कम्पनी को फोन किया। कम्पनी के एजेंट आर्यन ने आश्वस्त किया कि कार्यक्रम वही है, काले धुंए के बादल उनकी यात्रा में कोई व्यवधान नहीं डालेंगे। गुब्बारे में पुनः हवा भर गई और वह सपनों के आकाश में उड़ान

भरने लगा।

बीस अप्रैल को सुबह सवा बजे राजधानी ट्रेन पकड़ कर रजत और अनुभा दिल्ली पहुंचे, दिन भर अपने सम्बन्धियों के आतिथ्य का आनन्द उठाया और रात ढाई बजे इन्दिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पहुंच गए। यहां तीन घंटे प्रतीक्षा करनी थी। अनुभा का मन यूरोप की धरती पर पांव रखने को आतुर था, अतः उसे अबूधाबी के हवाई अड्डे पर रुकने का विचार प्रीतिकर नहीं लगा।

अपना सामान अगली उड़ान के लिए चेक-इन करके, समय व्यतीत करने के उद्देश्य से वो दुकानों की ओर बढ़ गए। अबूधाबी हवाई अड्डे पर जगमगाती दुकानों पर रखे तरह-तरह के सामानों को देख कर अनुभा को अपना विचार बदलना पड़ा। यहां तो इतने आकर्षण थे कि तीन घंटे क्या तीन दिन भी बिताना कोई बुरा विचार नहीं था। तीन घंटे के अन्तराल में हीरे के आभूषण और मोबाइल की दुकानें अनुभा और रजत को यात्रा में खरीदारी न करने के संकल्प को मुंह चिढ़ाने लगीं ।

"हम लौटते में एक मोबाइल लेंगे। रजत बोले।"

"और हम हीरे का पेन्डेन्ट लेंगे।" अनुभा ने कहा और दोनों ही हंस पड़े।

विमान में बैठने की उद्घोषणा हुई और दोनों चल पड़े अगली उड़ान पर। उनके बगल की सीट पर एक युवा जोड़ा बैठा था, पर अनुभा के मन में अपने आगामी दिनों की कल्पना से निकलने की कोई इच्छा नहीं थी अतः उसने उनसे परिचय करने की कोई उत्सुकता प्रदर्शित नहीं की, न ही उन्होंने बात करने की कोई पहल की। यूं भी वायुयान यात्री अपने सहयात्री से रेल यात्रियों जैसी आत्मीयता बढ़ाने में तनिक कम ही विश्वास रखते हैं।

अनुभा थक कर आंखें बन्द कर विश्राम कर रही थी। रजत बोले—"यार ये एतिहाद एअरलाइन्स वाले खाना-वाना नहीं देंगे क्या?"

तभी दो लम्बी छरहरी विमान परिचारिकाएं अपनी व्यापारिक सौम्य मुस्कराहट बिखेरती खाने के पैकेटों की ट्राली लिए प्रकट हो गयीं। अनुभा ने कहा—"लीजिए आपकी मनोकामना पूर्ण हुई।"

सभी यात्री जो सुप्तावस्था में ऊंघ रहे थे चैतन्य हो गए, विमान में फैले विभिन्न व्यंजनों की सुगंध ने लोगों की उदराग्नि जागृत कर दी और विमान की शान्ति में सुगबुगाहट तैर गयी।

2

वायुयान ने एथेन्स की धरती पर पांव रखे। अल-वेलेजोलॉस हवाई अड्डे पर टूर मैनेजर प्ले कार्ड लेकर आने वाले अपने समूह के यात्रियों की प्रतीक्षा कर रहे थे।

वायुयान से उतरे वो सभी यात्री जो कि पैकेज टूर के समूह में थे। मैनेजर के चारों ओर एकत्र हो गए। मैनेजर ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा—"मित्रों, मैं सुमित वर्मा आपके इस टूर का गाइड हूं। मैं आप सबको पूरे टूर में यात्रा में सहायता करूंगा और आपकी किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान करने का पूरा-पूरा प्रयास करूंगा।"

फिर कुछ रुक कर बोला—"मेरा वादा है कि आप जब यात्रा करके भारत लौटेंगे तो एक नया और सुखद अनुभव आपके साथ होगा।"

सुमित लगभग तीस वर्ष का सौम्य और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला युवक था।

फिर सुमित बोले—"सामने खड़ा नीला कोच हम लोगों का है। आप लोग बस में बैठ जाइए, अब हम होटल चलेंगे और थोड़ा विश्राम करके एथेन्स के सौन्दर्य से दो-चार होंगे।"

सुमित के इतना कहते ही अपनी शालीनता का लबादा फेंक कर सब के सब अच्छी, अर्थात आगे की या खिड़की के पास की सीट लेने के लिए दौड़ पड़े। एक देश के लोग दूसरे देश में एक दूसरे को अजनबी और प्रतिद्वन्दी लग रहे थे। उस समय तो आगे की सीट लेना ही उनकी प्रतिद्वन्दिता का कारण बन गया था। अनुभा के पास की सीट पर जो जोड़ा आया। उसे देख कर वह चौंक पड़ी, यह तो विमान में उनका सहयात्री युगल था, जो दिल्ली से ही उनके पास वाली सीट पर था। वो दोनों भी अनुभा को देख कर मुस्करा दिए।

"मैं निमिषा उदयपुर से हूं।" उस युगल में से लड़की ने कहा।

"और मैं अनुभा लखनऊ से।"

"ये मेरे हसबैंड सचिन!" निमिषा ने अपने पति का परिचय देते हुए कहा। सचिन ने नमस्कार की मुद्रा में हाथ जोड़ दिए।

"आंटी चलेगा?" निमिषा बोली।

"चलेगा नहीं दौड़ेगा।" अनुभा ने मुस्करा कर कहा और आत्मीयता के फूल विदेश की धरती पर खिल उठे।

पीछे की सीट से दूसरी सह यात्री जो उनकी बातचीत सुन रही थी बोली—"आप लखनऊ से हैं, हम भी वहां रहे हैं।" यह थी संजना और उसके साथ ऋषभ। एक और अपरिचय की दीवार ढही। कुछ क्षण पूर्व सीट के लिए प्रतिद्वन्द्वी बने यात्री अब उन्नीस दिनों के सहयात्रियों को देख-परख रहे थे और संकोच की दूरी कम करने का प्रयास कर रहे थे।

सबको टिटेनिया होटल ले जाया गया। लिफ्ट चार और लोग लगभग पैंतालिस। कमरे की चाभी मिलते ही लिफ्ट में पहले चढ़ने की होड़ लग गई, सब भूल गए कि टूर मैनेजर ने कहा था कि सब लोग पंक्ति में बारी-बारी से लिफ्ट में जाएंगे। अनुभा लखनवी तहजीब दिखाते हुए अपनी बारी आने की प्रतीक्षा में खड़ी थी और लोग धक्का देते आगे बढ़ते जा रहे थे, तभी एक स्मार्ट और आकर्षक युवक ने उसके लिए जगह